॥ श्री ॥

गद्यचिन्तामणि

GADYACHINTAAMANI

आ. वादीभसिंह · १०वीं शती · अभिलेख ४३/९०

श्री वादिराज-2 → आ. वादीभसिंह

संक्षिप्त परिचय

आचार्य वादीभसिंह कृत — जीवंधर स्वामी की कथा का अलंकृत संस्कृत गद्य-काव्य; बाण की कादम्बरी-शैली का जैन प्रतिरूप माना जाता है।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

गद्यचिन्तामणि — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ४३ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. वादीभसिंह; रचना-काल १०वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक २७०) के अनुसार इनका समय ११०३ है तथा गुरु श्री वादिराज-२। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "स्याद्वादसिद्धि" उल्लिखित है। इसी लेखनी से क्षत्रचूड़ामणि भी इस सूची में सम्मिलित है। समकालीन ग्रन्थों में चन्द्रप्रभचरित, प्रद्युम्नचरित, यशस्तिलकचम्पू, नीतिवाक्यामृत, गोम्मटसार जीवकाण्ड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

क्षत्रचूड़ामणि

समकालीन ग्रन्थ

चन्द्रप्रभचरित · प्रद्युम्नचरित · यशस्तिलकचम्पू · नीतिवाक्यामृत · गोम्मटसार जीवकाण्ड · गोम्मटसार कर्मकाण्ड

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ४३ — मूल छायाचित्र

← प्रद्युम्नचरित

क्षत्रचूड़ामणि →